समीक्षा

सामाजिक कसमसाहट का जीवंत चित्रण
दस प्रतिनिधि कहानियां

• पूजा प्रजापति

जैसे ही विदेश, प्रवासी या विदेशी शब्द जहन में आते हैं तो, एक ही बात ध्यान में आती है कि वह संस्कारहीन, आदर्शहीन होते हैं। क्या, यह सिर्फ एक धारणा है या एक मिथ्या भ्रम? संभवतः हो सकता है कि यह सत्य भी हो, लेकिन क्या यह तय कर लेना उचित है कि सभी विदेशी और प्रवासी संस्कारहीन और आदर्शहीन ही होते हैं? हमारे हाथ की पांचों उंगलियों में से अगर एक उंगली सबसे छोटी है तो क्या सभी छोटी कही जा सकती हैं? नहीं न फिर, यही तार्किकता विदेश, प्रवासियों और विदेशियों पर बात करते वक्त कहां चली जाती है? प्रायः कहा जाता है कि विरहावस्था में ही प्रेम पराकाष्ठा तक पहुंचता है। ठीक ऐसे ही भारत से दूर रह रहे हमारे भारतीय जब विदेश में चले जाते हैं तब उन्हें, भारत से और अधिक लगाव हो जाता है। वह लोग वहां जाकर पूरी तरह से विदेशी नहीं बन पाते हैं, क्योंकि उनके भीतर संस्कारों का बीज फल-फूल चुका होता है। उनके भीतर एक कसमसाहट रहती है, जिसके चलते वह दोनों संस्कृतियों की तुलना करते हुए, अपने को उसे जुदा रखने की कोशिश करते हैं। उनकी यही कोशिश उन्हें कभी पूर्णतः विदेशी नहीं बनने देती। प्रवासी साहित्य में प्रायः संस्कृति और मूल्यों की टकराहट के बीच फंसे व्यक्तियों के अंतर्द्वंद्व को दिखाया गया है। साथ ही, विदेशी पृष्ठभूमि पर होने वाले सामाजिक बदलावों की नींव तक पहुंचने की कोशिश भी की गई है।

जीवन के अनेक पहलुओं को चित्रित कर, भारतीय प्रवासी लेखिका सुधा ओम ढींगरा अपनी कहानियों में उस सच को प्रस्तुत करती हैं जो शायद, आधुनिकता की चकाचौंध तथा भावनाओं की मृत्युशैया में कहीं दफन हो गया था। इनकी कहानिहयों में केवल स्त्री ही केंद्र में नहीं बल्कि पुरुष के साथ-साथ हर वह पीड़ित तबका भी है जिसे किसी-न-किसी ने शोषित किया हो। फिर वह शोषक चाहे उसके अपने परिजन हों या कोई प्रतिष्ठित संस्था। विवाह भी एक ऐसी ही संस्था है जिसने कई व्यक्तियों की जिंदगी का भरपूर शोषण किया है।

कहानी संग्रह ·
दस प्रतिनिधि कहानियां,
लेखिका : सुधा ओम ढींगरा,
प्रकाशक : शिवना प्रकाशन,
सीहोर, मध्य प्रदेश;
संस्करण : 2015,
मूल्य : 100 रुपये

शिवना प्रकाशन से प्रकाशित समर्थ लेखिका सुधा ओम ढींगरा की पुस्तक 'दस प्रतिनिधि कहानियां' श्रेष्ठ कहानियों का संकलन है। 'बेघर सच', 'कमरा नंबर 103', 'आग में गर्मी क्यों है?', 'सूरज क्यों निकलता है?', 'क्षितिज से परे', 'विष-बीज', 'कौनसी ज़मीन अपनी', 'टॉरनेडो', 'वह कोई और थी', 'पासवर्ड' इत्यादि कहानियां संवेदना और शिल्प की सम्पूर्णता लिए हुए हैं। इस कहानी संग्रह के शुरुआत में हिंदी के युवा प्रतिष्ठित लेखक पंकज सुबीर द्वारा लिखी विस्तृत भूमिका कहानियों पर बेहतर प्रकाश डालती है। उन्होंने विस्तृत रूप से कहानियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर लेखिका के कहानी-कौशल पर भी चर्चा की है। साथ ही, प्रतिष्ठित रचनाकारों द्वारा लेखिका सुधा ओम ढींगरा की कहानियों तथा उनके कथा-संसार पर की गई संक्षिप्त टिप्पणियां भी संकलित किया गया है।

'बेघर सच' कहानी में रंजो के माध्यम से लेखिका ने एक स्त्री के अस्तित्व की खोज की है। प्रायः बेटी के रूप में स्त्री को पराया धन कह कर अपने से मानो जैसे अलग कर दिया जातां है। मायके में दूसरे की अमानत और ससुराल में दूसरे घर से आई स्त्री का बिल्ला उसके दामन से कभी नहीं हटता। संस्कृति की वाहन मानी जाने वाली स्त्री प्रायः किसी-न-किसी कला की स्वामिनी भी होती

है। ऐसे में जब वह उसी कला के साथ ससुराल में आती है तो उसकी कला को निष्प्राण करने की भरसक चेष्टा की जाती है। इस कार्य में कई बार ससुराल पक्ष की जीत होती है, लेकिन उस आने वाली बहू की कला की असामयिक मृत्यु। क्या, स्त्री के शादी कर लेने का अर्थ खुद को तथा अपनी प्रतिभा को हमेशा के लिए तिलांजलि दे देना है?

'कमरा नंबर-103' में लेखिका ने बड़ी कुशलता से मुख्य पात्र (मिसेज वर्मा) को संवादहीन रखते हुए भी उसकी पीड़ा को मुखरता प्रदान की है। बार्नज अस्पताल की नर्सें टैरी और ऐमी की वाक्पटुता, मिसेज वर्मा की चुप्पी के साथ मिलकर एक नए किस्म की संवाद शैली को जन्म देती हैं। नर्सें टैरी और ऐमी के बीच का संवाद कहीं भी मिसेज़ वर्मा की चुप्पी से टूटता-बिखरता नहीं है। दोनों संवाद ऐसे घुल-मिल जाते हैं, जैसे तीनों आपस में ही कर रहे हैं। प्रवासी परिवेश की इन कहानियों में भागती-दौड़ती ज़िंदगी के बीच उस भाईचारे और सौहार्द के भी संकेत मिलते हैं, जिनके अब भारतीय भूमि से नामोनिशां तक मिटने लगे हैं। भारतीय अस्पतालों की अगर बात करें तो वहां नर्सें इतने रुखे व्यवहार से पेश आती हैं कि जैसे मरीज का खर्चा वही उठा रही हों। मरीज के शरीर की देखभाल तो क्या भर्ती होने पर उनसे आप अपनी दवाई भी दोबारा नहीं पूछ सकते। विदेशी सरकारी अस्पतालों की इस खूबी को यह कहानी प्रस्तुत करती है।

'आग में गर्मी कम क्यों है?' कहानी में जेम्ज के साथ सम्बंध रखने वाला शेखर अपनी मृत्यु के बाद साक्षी के लिए कई सवाल छोड़ गया। वह सब कुछ स्वीकार करते हुए भी जानना चाहती है कि उसके प्यार में कहां कमी रह गई थी।

लेखिका ने अपनी अगली कहानी 'सूरज क्यों निकलता है?' में होमलेस और गरीबी रेखा से नीचे बसर करने वालों को सरकार द्वारा प्राप्त होने वाली सुविधाओं का होता गलत इस्तेमाल इसमें प्रस्तुत किया गया है। बैठे-बिठाए मिलने वाली दो जून की रोटी का जुगाड़ लोगों को गतिविहीन, मक्कार, धोखेबाज बना देता है। पीटर और जेम्स खाना खाने के लिए मिलने वाले कूपन को बेचकर शराब से गला तर करना और जवानी की रंगत से आंखे चमकाना ज्यादा बेहतर समझते हैं। प्रस्तुत कहानी एक ऐसे बड़े समुदाय को सीख देती है जो मांगने वाले लोगों की हैल्प कर गुप्तदान से अपना जन्म सुधारते हैं। हम किसी के मुंह में निवाला देकर उसकी मदद के साथ-साथ उसे परिश्रम करने से भी रोकते हैं। कहानी में पीटर और जेम्स का जीवन ऐसे लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिन पर बदतर हालात पर भी रहम नहीं करना चाहिए। ऐसे लोग अपनी गरीबी हमेशा बनाए रखना चाहते हैं जिससे, उनकी मदद होती रहे और उन्हें मेहनत न करनी पड़े।

'क्षितिज से परे...' कहानी में लेखिका ने स्त्री के अस्तित्व की लड़ाई को पेश किया है। इसमें उन्होंने मानसिक और शारीरकि पीड़ा झेलती रहती उन स्त्रियों से संवाद किया है जो, समाज के डर से खुद को पीड़ित होने देती हैं। बचपन से समाज उन चार लोगों का डर घुट्टी की तरह पिला देते हैं जिसे फिर, दिमाग से या कहूं तो अपने अस्तित्व से निकाल पाना नामुमकिन होता है। यही अदृश्य डर कई ज़िंदगियों के लिए मात्र जहर से बढ़कर कुछ भी नहीं। सारंगी जिसने अपने 40 साल पति के साथ बिताए या कहूं तो घसीटे उसके लिए अब निभा पाना मृत्यु से कम नहीं था। हालांकि वह, मर तो रही थी हर पल। लेकिन अब पानी सर से ऊपर जा चुका था। अब वह केवल 10वीं पास एक मामूली स्त्री नहीं बल्कि एक प्रोफेशनल पेंटर, समाजसेवी नर्स तथा परिजन बन कर एक व्यापक परिवार का हिस्सा बन चुकी थी। अब उसकी प्राथमिकताएं पहले जैसी चारदीवारी में कैद नहीं थी, अब वह क्षितिज से परे खुले आकाश में स्थापित हो चुकी थीं। उसका पति सिर्फ एक मशीन बनकर रह गया था, जो सिर्फ जरूरत पड़ने पर पैसे तो दे सकता है लेकिन, किसी के दुःख-दर्द से पीड़ित नहीं हो सकता। बिलकुल, ए.टी.एम. जैसा। विदेश में जाकर नए परिवेश में बसने के संघर्ष को दोनों झेलते हैं लेकिन, दोनों का संघर्ष अलग-अलग और महत्त्वपूर्ण है। इसी बात को उसका पति समझना नहीं चाहता। अनगिनत अत्याचार सहकर भी शादी से बंधे रहना, इस तरह के दकियानूसी विचारों का मोह केवल लोगों के जीवन को तबाह कर सकता है, उन्हें आबाद नहीं। स्त्री-शक्ति को चित्रित करती यह कहानी काफी सशक्त कहानी है।

'विष-बीज' इस कहानी में एक बलात्कारी बनने की प्रक्रिया, उसका हवसभरा जीवन और फिर बाद में उसका इकबाल-ए-जुर्म है। रोजमर्रा की सहचर होती बलात्कारों की घटनाओं के चलते कई लोग बलात्कारियों के अंग-भंग की मांग करते हैं, जिससे संभवतः इनके रुकने तथा कम होने के आसार लगते हैं। कहानी में इस अहम मांग को भी उठाया गया है। इस कहानी के द्वारा ऐसे कई संस्थानों का पर्दाफाश भी किया गया है जो अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए सरकार से अनुदान प्राप्ति के लिए कई जिंदगियों से खिलवाड़ करते हैं।

'कौन सी जमीन अपनी' हमारे अपने खास रिश्ते जिन्हें हम संभवतः पूजते हैं, उन रिश्तों के द्वारा मिलने वाले विश्वासघात की कहानी है। एक बड़ी कहावत है जर, जोरू और जमीन यह तीनों फसाद की जड़ हैं। इस कहानी का यही केंद्र कहा जा सकता है। मनजीत सिंह, अमेरिका का ग्रीनकार्ड होल्डर लेकिन उसका मन पूर्णतः भारत का नागरिक। मनजीत सिंह बचपन से लेकर जवानी तक की सभी खट्टी-मिट्ठी यादों को अमेरिकी की सुख-सुविधा से परिपूर्ण जिंदगी में भी याद करता है। मनजीत सिंह एक ऐसे कल्पनालोक में जीता है जिसमें केवल और केवल रिश्तों का आदर्श रूप ही उस लोक का अधिष्ठाता है। इस कहानी में एक ऐसे मध्यवर्गीय परिवार की विडंबना को चित्रित किया गया है, जो

अपनी गरीबी मिटाने के लिए एन.आर.आई. बहू को तो अपना लेते हैं, लेकिन उसे हमेशा बेटे को दूर करने वाली करमजली सें ज्यादा मान नहीं देते हैं। अपने सगे-रक्त-सम्बंधियों के लिए मनजीत केवल ए.टी.एम. मशीन है जो समय-समय पर कभी जमीन तो कभी पैसा उगलती है। 'पासवर्ड' कहानी में लेखिका ने उन मध्यवर्गीय लोगों को चित्रित किया है जो विदेश का वीजा प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। ऐसे लोगों से शादी कर उन्हें ग्रीन कार्ड पाने की जल्दी रहती है। ऐसे मध्यवर्गीय लोगों की जालसाजी का पर्दाफाश कर लेखिका ने अपनी कथ्य-विभिन्नता की विशेषता को समृद्ध किया है। स्त्री की उस छवि को चित्रित किया गया है, जो अपने प्रेमी के साथ मिलकर षड्यंत्र रचती है। वह अपने पति को सम्बंध बनाने नहीं देती लेकिन उससे मिलने वाले ग्रीन कार्ड का भरपूर फायदा लेना चाहती है। स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों को देखते हुए उनकी सुरक्षा के लिए कानून समय-समय पर कई संशोधन करता आया है। इन संशोधनों के प्रयोग से कई घर जहां टूटने से बचे भी हैं तो वहीं कई टूटे भी हैं। क्योंकि हर वस्तु, नियम का गलत और सही दोनों तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है। यहां भी कुछ ऐसा मामला है। यहां स्त्री-अधिकारों का उपयोग अपनी ही स्वार्थसिद्धि के लिए हो रहा है। विदेश में प्रवास के दौरान लिखी गई इन कहानियों में भारतीय संस्कृति के मूल्यों, आदर्शों को विदेशी माहौल में जीवित रखने की एक द्वंद्वात्मक स्थिति मिलती है। इन कहानियों में दो संस्कृतियों तथा दो देशों की टकराहट व परम्परागत मूल्यों के निरंतर ह्रास को देखकर उत्पन्न हुई पीड़ा मिलती है। यह विशेषता भारतीय भूमि पर लिखे हिंदी साहित्य की कहानियों में प्रायः नहीं मिलती। लेखिका सुधा ओम ढींगरा किसी एक वर्ग (स्त्री-पुरुष) की पक्षपाती नहीं, बल्कि शोषण के विरुद्ध पीड़ित वर्ग के साथ दिखती हैं। ये सभी कहानियां रिश्तों के बीच की कसमसाहट को जीने वाले पात्रों का जीवंत कच्चा चिट्ठा है। यहां रिश्तों में आई कड़वाहट, ऊब, घुटन, बेचैनी, कसक, अनिच्छा, बोझिलता, पीड़ा, उदासीनता, उपेक्षा, खुदगर्जी, शून्यता इत्यादि स्पष्टतः देखी जा सकती है। लेखिका अपनी सभी कहानियों के पात्र तथा वातावरण विदेशी रखकर भी उसे कहीं बोझिल बनने नहीं देती। कहानियों को पढ़कर कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि यह सभी कहानियां विदेश की हैं, क्योंकि इनमें आए पात्र और समस्याएं हमारे आस-पास ही मौजूद हैं। लेखिका की भाषा शुरू से ही पाठक को अपने से जोड़े रखती है। इनकी सहज, सरल और पात्रानुकूल भाषा कहानी में निरंतर कौतूहल बनाए रखती है। प्रवासी लेखिका सुधा ओम ढींगरा की इन दस प्रतिनिधि कहानियों को पढ़कर आप यह नहीं कह सकते कि यह दलितवादी या स्त्रीवादी लेखिका हैं। इन्होंने इन सभी कहानियों में विषय-वैविध्य को बनाए रखा है। समाज में जो जैसा, जितनी विद्रूपता को ओढ़ते हुए सच विद्यमान हैं इन्होंने उसे वैसा ही बिना किसी और अतिशयोक्ति प्रस्तुत किया है। यही विशिष्टता लेखिका की कहानियों की अपनी खास पहचान है।

एम.फिल., अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
दिल्ली, मो. 97112 54428

समीक्षा